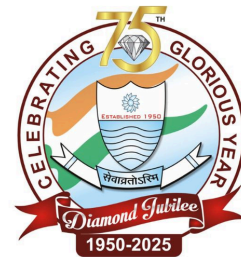




गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार



हिंदी विभागीय पत्रिका

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिये आवश्यक है ।

राजपाल



सत्र : 2024-25

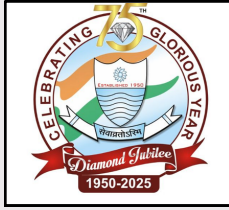
नवंबर, 2025

हिंदी विभागीय पत्रिका

हिंदी ... साहित्य... प्रौद्योगिकी...

हिंदी समृद्ध परम्परा की अगली कड़ी

वर्ष : 01 अंक 11 नवंबर 2025
कार्तिक | विक्रम संवत्-2082



संस्थापक सम्पादक

डॉ राजपाल

सहायक सम्पादक

डॉ. राजेंद्र प्रसाद

डॉ. वीरेंद्र

डॉ. देवेंद्र सिंह सांगा

छात्र सम्पादक

किरण रानोलिया

रिनु

राहुल, प्रियंका

संतोष

सम्पादकीय कार्यालय

हिंदी विभाग, गुरु गोरखनाथ जी राजकीय
महाविद्यालय हिसार

9466370922, 9255451522

gchisarhindi@gmail.com
dr.rajhisari@gmail.com

एक नज़र

प्राचार्य संदेश

संपादकीय

गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

परिचय

हरिवंश राय बच्चन - एक परिचय

गुरु नानक देव जी एवं गुरु पर्व की वर्तमान
प्रासंगिकता तथा मानवीय मूल्य
विविध

साहित्य प्रश्नोत्तरी

शब्द-सम्पदा

प्रशासनिक शब्दावली

समाज की रीढ़: भारतीय संविधान एक
आलोचनात्मक विश्लेषण

पुस्तक समीक्षा



संदेश

1 नवंबर 1966 को हरियाणा एक स्वतंत्र राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। इस दिन को हम हरियाणा दिवस के रूप में मनाकर अपनी संस्कृति, भाषा और सामाजिक एकता का जश्न मनाते हैं। हरियाणा ने देश को कृषि, खेल, शिक्षा और सैन्य सेवाओं में अमूल्य योगदान दिया है। आज हमें इस बात पर गर्व है कि हमारा राज्य निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है, लेकिन साथ ही हमें अपनी जड़ों से जुड़े रहने की भी आवश्यकता है। हरियाणा की मिट्टी ने महान स्वतंत्रता सेनानियों, खिलाड़ियों और विद्वानों को जन्म दिया है। यह दिवस हमें अपनी जिम्मेदारियाँ याद दिलाता है – राज्य के विकास में सहयोग देना और इसकी समृद्ध विरासत को संजोकर रखना। 14 नवंबर को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्मदिन बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। नेहरू जी बच्चों से अत्यधिक स्नेह रखते थे और उन्हें देश का भविष्य मानते थे। यह दिन हमें याद दिलाता है कि बच्चों के शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास के लिए एक सुरक्षित, स्वस्थ और शिक्षित वातावरण तैयार करना हम सभी का दायित्व है। आज के बच्चे कल के वैज्ञानिक, शिक्षक, डॉक्टर और नेता होंगे। इसलिए, हमें उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, संस्कार और अवसर प्रदान करने होंगे, ताकि वे एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकें। 28 नवंबर को महान समाज सुधारक महात्मा ज्योतिबा फुले की पुण्यतिथि है। उन्होंने स्त्री शिक्षा, समानता और सामाजिक न्याय के लिए अपना जीवन समर्पित किया। उनके प्रयासों से समाज के पिछड़े और वंचित वर्गों को शिक्षा और अधिकार मिले। फुले जी का संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है। हमें उनसे यह सीख लेनी चाहिए कि शिक्षा सबका अधिकार है और बिना भेदभाव के एक सशक्त समाज का निर्माण संभव है। उनके आदर्शों को हम तभी सार्थक कर सकते हैं, जब हम शिक्षा, समानता और न्याय के मार्ग पर चलें। ये तीनों तिथियाँ हमें एक सूत्र में बाँधती हैं – हरियाणा दिवस हमें अपनी पहचान और गौरव से जोड़ता है, बाल दिवस भविष्य निर्माण की प्रेरणा देता है, और ज्योतिबा फुले की पुण्यतिथि सामाजिक बदलाव की ओर संकेत करती है। आइए, हम इन महान विभूतियों के सपनों को साकार करने के लिए संकल्प लें और एक बेहतर हरियाणा बेहतर भारत के निर्माण में सहभागी बनें।

प्राचार्य

डॉ विवेक कुमार सेनी



संपादकीय

तीन प्रेरणाएँ, एक संकल्प: हरियाणा दिवस, बाल दिवस और ज्योतिबा फुले जी की विरासत

नवंबर माह हमारे सामने तीन ऐसी ऐतिहासिक तिथियाँ लेकर आता है जो हमें अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच एक सूत्र में बाँधती हैं। ये तीनों तिथियाँ - 1 नवंबर हरियाणा दिवस, 14 नवंबर बाल दिवस और 28 नवंबर महान समाज सुधारक ज्योतिबा फुले जी की पुण्यतिथि - हमें एक साथ मिलकर चलने का संदेश देती हैं। 1 नवंबर 1966 को हरियाणा राज्य के गठन के साथ ही एक नए युग का आरंभ हुआ। आज 58 वर्षों के इस सफर में हरियाणा ने कृषि, उद्योग, शिक्षा और खेल के क्षेत्र में अभूतपूर्व उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। परंतु हरियाणा दिवस केवल उपलब्धियों का जश्न मनाने का दिन नहीं है, बल्कि यह हमें अपनी जिम्मेदारियों का भी बोध कराता है। हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक मूल्य और भाषाई गौरव को बनाए रखना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। हरियाणा दिवस हमें यह प्रेरणा देता है कि हम आधुनिकता के साथ-साथ अपनी पहचान को भी सुरक्षित रखें। 14 नवंबर को हम भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में मनाते हैं। नेहरू जी का बच्चों के प्रति विशेष स्नेह हमें यह याद दिलाता है कि बच्चे देश का भविष्य हैं। आज के डिजिटल युग में जब बच्चे पश्चिमी संस्कृति की ओर आकर्षित हो रहे हैं, हमारी जिम्मेदारी है कि उन्हें अपनी संस्कृति, भाषा और परंपराओं से जोड़े रखें। शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों का विकास, नैतिक मूल्यों का पोषण और सामाजिक चेतना का विकास बाल दिवस का वास्तविक उद्देश्य है। हमें ऐसा वातावरण तैयार करना होगा जहाँ बच्चे सुरक्षित, स्वस्थ और शिक्षित रह सकें। 28 नवंबर को महान समाज सुधारक ज्योतिबा फुले की पुण्यतिथि हमें सामाजिक न्याय और समानता का संदेश देती है। फुले जी ने अपना संपूर्ण जीवन स्त्री शिक्षा, दलित उत्थान और सामाजिक समानता के लिए समर्पित कर दिया। उनके संघर्ष ने समाज के पिछड़े वर्गों को शिक्षा और अधिकार दिलाने का मार्ग प्रशस्त किया। आज भी जब हम शिक्षा, रोजगार और सामाजिक भागीदारी में समानता की बात करते हैं, तो फुले जी के आदर्श हमारे मार्गदर्शक बनते हैं। उनकी शिक्षा है कि जब तक समाज का अंतिम व्यक्ति शिक्षित और सशक्त नहीं होगा, तब तक वास्तविक विकास संभव नहीं है। इन तीनों तिथियों के मूल में एक ही भावना निहित है - निरंतर विकास और सामाजिक उन्नति। हरियाणा दिवस हमें अपनी पहचान से जोड़ता है, बाल दिवस भविष्य निर्माण की प्रेरणा देता है और फुले जी की विरासत सामाजिक न्याय का मार्ग दिखाती है। ये तीनों एक दूसरे के पूरक हैं - एक सशक्त हरियाणा के लिए जरूरी है कि हम अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा दें और एक समतामूलक समाज का निर्माण करें।

आइए, हम इन तीनों प्रेरणादायी तिथियों से प्रेरणा लेकर एक ऐसे हरियाणा के निर्माण का संकल्प लें जहाँ संस्कृति का गौरव, बच्चों का सुनहरा भविष्य और सामाजिक न्याय की भावना सदैव जीवित रहे। यही हमारी वास्तविक पहचान होगी और यही हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि।



गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

गतांक से आगे....

इन्होंने अपनी सबदियों में उन्मनी साधन, संयम, बिन्दुरक्षा, अजपाजाप, नादानुसंधान, शब्दमहत्त्व, अतित्याग, अल्पाहार, अल्पवाणी, मन-पवन साधन, पिंड ज्ञान, प्राणायाम, नाड़ी साधन, गुरु भोर गुरु शब्द का महत्त्व, आडंबर विरोध, स्वर योग श्रादि विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। काया को कष्ट देकर उसे साधने वाले, पावड़ी पहनकर चलने वाले, लोहे की शृंखलाओं से शरीर को बधिकर उसे नियंत्रित रखने वाले नागा, मौनी, दूधाधारी सभी की इन्होंने आलोचना की है और इन सब को योग पथ के साधक नहीं माना है। इनका कथन है -

सांग का पूरा ग्यान का ऊरा, पेट का तूटा डिभ का सूरा । बंदत गोरखनाथ न पाया जोग, करि पाषंड रिझाया लोग ।

अतः गोरखनाथ कहते हैं :-

हसिबा षेलिबा रहिबा रंग, काम क्रोध न करिबा संग । हसिबा षेलिबा गाइबा गीत, दिढ़ करि राषि आपनौ चीत ।"

पद - गोरखबानी में संकलित ६२ पदों की विषय-वस्तु भी सबदी के ही समान है केवल कथन पद्धति में अन्तर है, जो स्वभाविक ही है, क्योंकि पदों का क्षेत्र अधिक विकसित होता है और इनमें अधिक कहने की संभावना होती है। परवर्ती काल में जो पदों की अधिकता है उसे इनकी ही देन समझना चाहिए। इन पदों में कहीं-कहीं गोरखनाथ ने संबोधनात्मक पद्धति अपनाई है। इन पदों में हठयोग, प्राणायाम, गुरुवाद, आडंबर विरोध, माया विरोध, अजपाजाप आदि विषयों को अनुभूत्यात्मक ढंग से व्यक्त किया गया है।" इन्होंने गुरु को नितान्त आवश्यक माना है क्योंकि गुरु के बिना योग का कोई कार्य नहीं हो सकता --

गुरु कीजै गहिना निगुर न रहिला । गुरु बिन ग्यान न पायला रे भाईला ।।"

इनका कथन है कि नाथ निरंजन परब्रह्म की आरती के लिए सजते हैं और अद्भुत दृश्य उपस्थित हो जाता है :-

नाथ-निरंजन आरती साजे, गुरु के सबदूँ झालरि बाजै । अनहद नाद गगन में गाजे, परम जोति तहां आप बिराजै ।।

अनत कला जाके पार न पावै, संष मृदंग धुनि बेनि बजावे । आदिनाथ नाती मछेन्द्र ना पूता, आरती करै गोरष औधूता ।।"

यही इनका चरम लक्ष्य है क्योंकि इस अगम की आरती उतारना योगी की पूर्ण अनुभूति को प्रकाशित करता है। इन पदों में गोरखनाथ की वैयक्तिकता तथा काव्यात्मकता सबदियों की तुलना में अधिक है।

३. शिष्या दरसन: इस रचना में गोरखनाथ का अपने शिष्यों को दिया उपदेश है। इसमें सूत्र जैसे वाक्य से कथन को प्रारंभ कर फिर उसकी व्याख्या की गयी है-"ऊं । अविगत उतपतते ऊं । ऊं उतपतते आक्रासं । आकासं उतपतते बाई । बाई उतपतते तेज" ।।" इस में सृष्टि की समस्त वस्तुओं में से सर्वश्रेष्ठ का चयन कर उसकी विशेषता नाथमतानुसार बताई गयी है।"

४. प्राणसंकली : - प्राणसंकली अर्थात् प्राणों की श्रृंखला गोरखनाथ की एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रचना है। नाथ और संत साहित्य में इस पद्धति और विषय- वस्तु की रचनाओं का व्यापक प्रयोग हुआ है। इसका मुख्य विषय पिंडज्ञान की व्याख्या करना है। इसके अनुसार जो ब्रह्मांड में है, वही पिंड में है, जो एक प्रकार का आत्मबोध है, क्योंकि बिना इसे जाने कोई योगी नहीं हो सकता और इसका प्राण की श्रृंखला से सीधा सम्बन्ध है। प्राण से चंचल शरीर को बाँधना तथा उसे स्थिरता, दृढ़ता और परिपक्वता प्रदान करना ही नाथयोग का प्राथमिक लक्ष्य है, जिसके लिए पिंडज्ञान आवश्यक है। इसमें षटचक्र, कुण्डलिनी, गुरु, नाद, बिन्दु, लय तथा सहस्रदल कमल का वर्णन भी किया गया है।

५. नरवैबोध :- नरवैबोध अर्थात् राजा का ज्ञान । इसमें योग की चार अवस्थाओं, भ्रारंभ, घट, परिचय और निष्पत्ति, का परिचय देकर योगानुकूल संयम एवं प्रचार का उपदेश दिया गया है। चित्त के संयम पर विशेष बल दिया गया है। स्तभन, मोहन और वशीकरण के त्यागने का उपदेश दिया गया है।" द्वन्दातीत होने का भी इन्होंने उपदेश दिया है -

"छाड़ौ दंद रहो निरवंद, तजो अल्यंगन रहो अबंध ॥

६. द्यात्मबोध :- श्रात्मबोध में भी सबदियों के समान उपदेश दिया गया है। इसका प्रारम्भ आसन की व्याख्या से किया गया है तथा शक्ति को ऊपर उठाने, अभ्यन्तर की अग्नि, पवन-साधना श्रादि की व्याख्या की गई है। जिससे अनाहत नाद सुनाई देता है। इनके अनुसार 'अकल' का अनुभव जो 'अकुल' जैसा है वही सब कुछ है अतः-

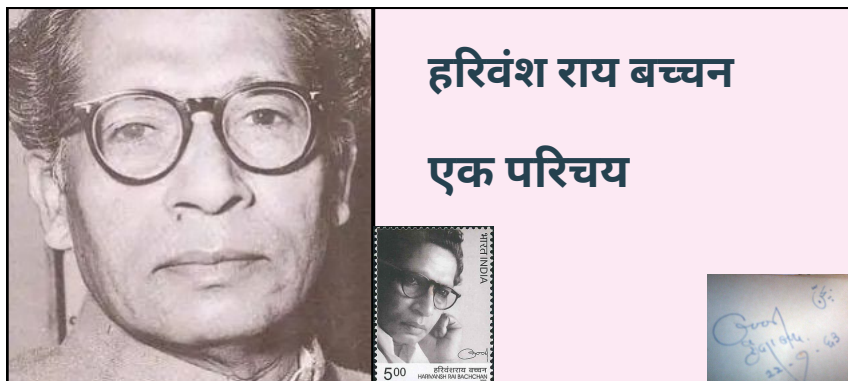
सत बोले सोई सतबादी, झूठ बोले सो महा पापी ॥

गुरु गोरखनाथ के पद

आंबलियौ थल मौरियौ, ऊपर नीब बिजौरं फलियौ। सो फल खातां लागै मीठौ, जाणै रे जिन गुर प्रसादें दीठौ ॥ टेक ॥

ऊँट सिचाणै जब ग्रह्यौ, जाइ कैरू डाली बैठौ। बाँझें बेटा जन्म्यौ, नैणें पुरिष न दीठौ ॥ लाकड़ डूबै सिल तिरै, देखतां जग जाइ। ऊँट प्रनालै बहि गयौ, सुसि ल्यौ पौली नै माइ ॥ डूंगरि मंछा जल सुसा, पाणीं मैं दौं लागा। अरहत बहै तुसालवाँ, सूलै काँटा भागा ॥ एक गाइ नौ बछड़ा, पंच दुहेबा जाइ। एक फूल सोलह करंडियाँ, मालनि हरषि न माइ ॥ पगां बिहूनड़ै चोरी कीधी, चोरी नैं आणीं गाइ। मछिंद्र प्रसादें गोरख बोल्या, दूझै पाणी न ब्याइ ॥

जब आत्मा (आंबलियौ) ने ब्रह्म स्थान (थल) का मार्ग (मौरियौ) पा लिया तो शरीर (नीब) पर ज्ञान (बिजौरा) का फल लगा। वह फल खाने में मधुर प्रतीत हुआ। उस ज्ञान को वही समझ पाता है जो गुरु के उपदेश से उसे देखने/जानने का प्रयास करता है। आत्मा (ऊँट) जब योग कर्म (कैरू) रूपी वृक्ष पर आरूढ़ हुआ तो उसने ज्ञान (शब्द) ग्रहण किया। बाँझ ने बेटे को जन्म दिया अर्थात् आत्मा ने ज्ञान/ब्रह्म पाया, व्यक्ति (पुरिष) स्थूल नयनों से उसे न देख सका। संसार देखता है कि लकड़ डूब जाता है और शिला तैरती है अर्थात् भारी वस्तु डूब जाती है और नरम (सिल) वस्तु तैरती रहती है। ऊँट नाले में बह गया और शशक/खरगोश ने ड्यौढी में ध्यान लगा लिया अर्थात् जब आत्मा ने ध्यान मार्ग में डूबकी लगाई तो जीव (सुसि) ने भ्रमर गुहा (पौली) में ध्यान लगा लिया। फिर कुण्डलिनी (मंछा) ललाट (डूंगरि/पहाड़ी) पर चढ़ गई तो जीव (सुसा) ब्रह्म (जल) में जा पहुँचा। फिर तृषा शान्त करने वाला चन्द्रामृत तालु में रहट की तरह बहने लगा। इस प्रकार शूल से काँटा निकाल लिया अर्थात् माया को माया द्वारा ही दूर कर दिया। एक शरीर (गाइ) है, इसमें नौ द्वार बछड़े हैं और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ इसे दुहती हैं। एक फूल (कण्ठ चक्र) है जिसमें सोलह कमल दल हैं। इस कण्ठ चक्र का शिव स्थान पाकर जीव (मालनि) फूला न समाया। जीव पैरों (कर्मों) के बिना चुपके से ऊपर चढ़ गया। उसने आकाश मण्डल में गाय चुरा ली अर्थात् मस्तिष्क स्थान में ब्रह्मानुभूति पा ली। मच्छन्दर की कृपा से गोरख कहता है कि इस विधि के पश्चात् दूसरी बार भवसागर (पाणी) में जन्म नहीं होगा।



हरिवंश राय बच्चन

हरिवंश राय बच्चन (27 नवम्बर 1907 – 18 जनवरी 2003) हिंदी भाषा के एक कवि और लेखक थे। वे हिन्दी कविता के उत्तर छायावाद काल के प्रमुख कवियों में से एक थे। उनकी सबसे प्रसिद्ध कृति मधुशाला है। भारतीय फिल्म उद्योग के अभिनेता अमिताभ बच्चन उनके सुपुत्र हैं। उनका निधन 18 जनवरी 2003 के दिन, साँस की बीमारी के कारण, मुम्बई में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी का अध्यापन किया। बाद में भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ रहे। अनन्तर राज्य सभा के मनोनीत सदस्य रहे। बच्चन जी की गिनती हिन्दी के सर्वाधिक लोकप्रिय कवियों में होती है।

मृत्यु

2002 के सर्दियों के महीने से उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। 2003 के जनवरी से उनको साँस लेने में दिक्कत होने लगी। कठिनाइयाँ बढ़ने के कारण उनकी मृत्यु 18 जनवरी 2003 में साँस की बीमारी के वजह से मुम्बई में हो गयी।

प्रमुख पुरस्कार

उनकी कृति दो चट्टानें को 1968 में हिन्दी कविता के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इसी वर्ष उन्हें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार तथा एफ्रो एशियाई सम्मेलन के कमल पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। बिड़ला फाउण्डेशन ने उनकी आत्मकथा के लिए उन्हें सरस्वती सम्मान दिया था। बच्चन को भारत सरकार द्वारा 1976 में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

बच्चन जी से संबंधित पुस्तकें

हरिवंश राय बच्चन पर अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं। इनमें उनपर हुए शोध, आलोचना एवं रचनावली शामिल हैं। बच्चन रचनावली (1983) के नौ खण्ड हैं। इसका संपादन अजितकुमार ने किया है। अन्य उल्लेखनीय पुस्तकें हैं- हरिवंशराय बच्चन (बिशन टण्डन) गुरुवर बच्चन से दूर (अजितकुमार)

प्रमुख कृतियाँ कविता संग्रह

तेरा हार (1929)[1],
मधुशाला (1935),
मधुबाला (1936),
मधुकलश (1937),
आत्म परिचय (1937)[2],
निशा निमंत्रण (1938),
एकांत संगीत (1939),
आकुल अंतर (1943),
सतरंगिनी (1945),
हलाहल (1946),
बंगाल का काल (1946),
खादी के फूल (1948),
सूत की माला (1948),
मिलन यामिनी (1950),
प्रणय पत्रिका (1955),
धार के इधर-उधर (1957),
आरती और अंगारे (1958),
बुद्ध और नाचघर (1958),
त्रिभंगिमा (1961),
चार खेमे चौंसठ खूंटें (1962),
दो चट्टानें (1965),
बहुत दिन बीते (1967),
कटती प्रतिमाओं की आवाज़ (1968),
उभरते प्रतिमानों के रूप (1969),
जाल समेटा (1973)
नई से नई-पुरानी से पुरानी (1985)

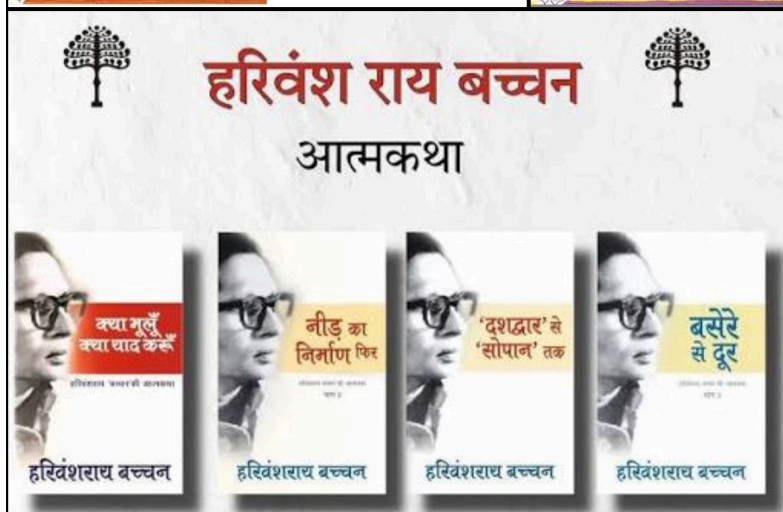
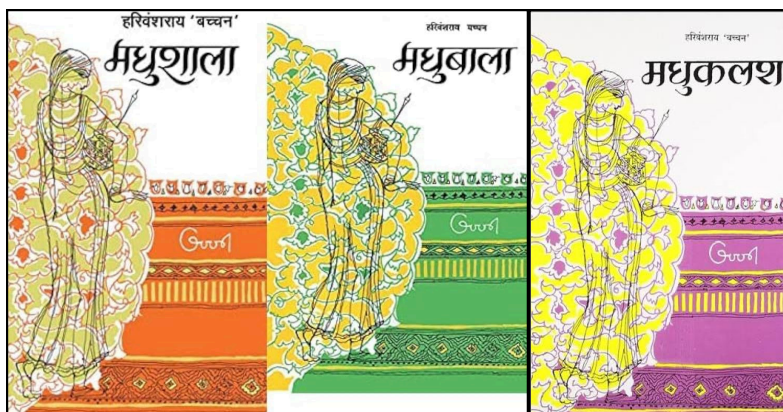
आत्मकथा

क्या भूलूँ क्या याद करूँ (1969),
नीड़ का निर्माण फिर (1970),
बसेरे से दूर (1977),
दशद्वार से सोपान तक (1985)
प्रवासी की डायरी

विविध

बच्चन के साथ क्षण भर (1934),
खय्याम की मधुशाला (1938),
सोपान (1953),
मैकबेथ (1957),
जनगीता (1958),
ओथेलो (1959),

उमर खय्याम की रुबाइयाँ (1959),
 कवियों में सौम्य संतः पंत (1960),
 आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि: सुमित्रानंदन पंत (1960),
 आधुनिक कवि (1961),
 नेहरू: राजनैतिक जीवनचरित (1961),
 नये पुराने झरोखे (1962),
 अभिनव सोपान (1964)
 चौंसठ रूसी कविताएँ (1964)
 नागर गीता (1966),
 बच्चन के लोकप्रिय गीत (1967)
 डब्लू बी यीट्स एंड अकल्टिज़म (1968)
 मरकत द्वीप का स्वर (1968)
 हैमलेट (1969)
 भाषा अपनी भाव पराये (1970)
 पंत के सौ पत्र (1970)
 प्रवास की डायरी (1971)
 किंग लियर (1972)
 टूटी छूटी कड़ियाँ (1973)[3]



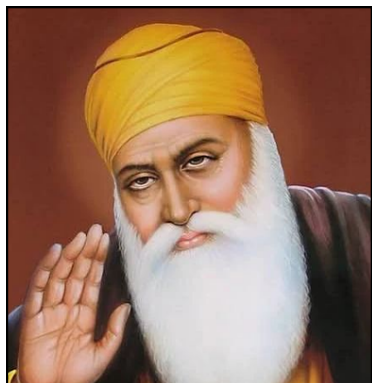
Basic English and Advanced English Words

1. साइबर सुरक्षा - Cyber Security
2. डिजिटल युग - Digital Era
3. कृत्रिम बुद्धिमत्ता - Artificial Intelligence
4. सोशल मीडिया - Social Media
5. डेटा विश्लेषण - Data Analysis
6. आभासी दुनिया - Virtual World
7. डिजिटल विभाजन - Digital Divide
8. सूचना का अधिभार - Information Overload
9. मोबाइल एप्लिकेशन - Mobile Application
10. तकनीकी लत - Technology Addiction
11. डिजिटल साहित्य - Digital Literature
12. स्मार्टफोन संस्कृति - Smartphone Culture
13. वेब श्रृंखला - Web Series
14. क्लाउड संग्रहण - Cloud Storage
15. स्वचालन - Automation
16. डिजिटल पुस्तकालय - Digital Library
17. आभासी वास्तविकता - Virtual Reality
18. साइबर अपराध - Cyber Crime
19. डिजिटल अभिव्यक्ति - Digital Expression
20. ब्लॉग साहित्य - Blog Literature



1. Anchal = 26/11/2001
2. Susham = 26/11/2001
3. Sachin = 28/11/2001
4. Minakshi = 06/11/2003

गुरु नानक देव जी एवं गुरु पर्व की वर्तमान प्रासंगिकता तथा मानवीय मूल्य



आधुनिक समय में जब मानवता भौतिकवाद, संघर्ष और नैतिक असमंजस के दौर से गुज़र रही है, गुरु नानक देव जी के शिक्षाएँ और गुरु पर्व की परंपरा एक प्रकाशस्तंभ की भाँति प्रासंगिक बनी हुई हैं। गुरु नानक देव जी ने पंद्रहवीं शताब्दी में जिन सिद्धांतों की नींव रखी, वे आज भी मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए एक सशक्त दार्शनिक आधार प्रदान करते हैं।

गुरु नानक देव जी का दर्शन: एक समकालीन पुनर्विचार

गुरु नानक देव जी का मूल संदेश "इक ओंकार" - एक ईश्वर की अवधारणा में निहित है, जो समस्त मानव जाति की एकता पर बल देती है। आज के विभाजित विश्व में, जहाँ धार्मिक, जातिगत और राष्ट्रीय विभेद मानवीय संबंधों में दरार पैदा कर रहे हैं,

यह सिद्धांत विश्व बंधुत्व की भावना को मजबूत करने में सहायक है। उनका प्रसिद्ध उद्धोष "न कोई हिन्दू न मुसलमान" समावेशी समाज के निर्माण का आधार है।

गुरु पर्व: आध्यात्मिकता का सामूहिक उत्सव

गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व के रूप में मनाया जाने वाला गुरु पर्व केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों के पुनर्स्मरण का अवसर है। यह पर्व हमें तीन मूलभूत सिद्धांतों की याद दिलाता है: नाम जपना (आध्यात्मिक सजगता), किरत करना (ईमानदारी से श्रम करना) और वंड छकना (समाज के साथ साझा करना)। वर्तमान उपभोक्तावादी संस्कृति में, जहाँ व्यक्तिवाद और लालच बढ़ रहा है, ये सिद्धांत संतुलन स्थापित करने में सहायक हैं।

वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता

1. सामाजिक समानता एवं नारी सम्मान: गुरु नानक देव जी ने स्त्रियों को समान दर्जा दिया, जो आज के नारी सशक्तिकरण आंदोलनों के साथ सीधे संवाद करता है। उन्होंने छुआछूत और जाति व्यवस्था का विरोध किया, जो आज भी भारतीय समाज में एक चुनौती है।
2. आर्थिक न्याय: "किरत करनी" का सिद्धांत ईमानदार श्रम को पवित्र मानता है, जबकि "वंड छकना" धन के पुनर्वितरण पर बल देता है। आर्थिक असमानता के इस युग में, यह दर्शन सतत विकास और सामाजिक न्याय का मार्ग प्रशस्त करता है।
3. पर्यावरण संरक्षण: गुरु नानक देव जी ने प्रकृति को दिव्य अभिव्यक्ति माना। उनके बचपन का प्रसंग, जब उन्होंने तपती धूप में अपना चादर फैलाकर एक छोटे से साँप को छाया दी, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता का प्रतीक है। जलवायु परिवर्तन के इस दौर में यह दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक है।
4. आध्यात्मिकता बनाम धार्मिक कर्मकांड: उन्होंने बाह्य आडंबरों के स्थान पर आंतरिक शुद्धता पर बल दिया। आज जब धार्मिक उन्माद बढ़ रहा है, गुरु नानक का यह संदेश शांति और सहिष्णुता का मार्ग दिखाता है।

मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना

गुरु नानक देव जी के दर्शन में निहित मानवीय मूल्यों - सत्य, ईमानदारी, निस्वार्थ सेवा और करुणा की आज सर्वाधिक आवश्यकता है। उन्होंने सच्चाई को सर्वोच्च गुण माना, जो आज के 'पोस्ट-ट्रुथ' युग में विशेष महत्व रखता है। लंगर की परंपरा न केवल भोजन का साझाकरण है, बल्कि सामाजिक समरसता का प्रतीक है, जहाँ सभी जाति, धर्म या वर्ग के बिना भेद एक साथ बैठते हैं।

निष्कर्ष

गुरु नानक देव जी की शिक्षाएँ और गुरु पर्व का उत्सव किसी एक धर्म या समुदाय तक सीमित नहीं, बल्कि समस्त मानवता के लिए प्रासंगिक हैं। आधुनिकता की अंधी दौड़ में जहाँ मनुष्य आध्यात्मिक शून्यता अनुभव कर रहा है, गुरु नानक का दर्शन मानवीय गरिमा, सामाजिक न्याय और आध्यात्मिक संतुष्टि का मार्ग प्रशस्त करता है। गुरु पर्व हमें यह याद दिलाने का अवसर देता है कि वास्तविक प्रगति वही है जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़े, उसकी नैतिक चेतना को जगाए और समाज में करुणा व सहयोग की भावना को बढ़ावा दे। इन शिक्षाओं को आत्मसात करके ही हम एक संतुलित, न्यायपूर्ण और मानवीय समाज का निर्माण कर सकते हैं, जो गुरु नानक देव जी के दृष्टिकोण का सारतत्व है।

साहित्य प्रश्नोत्तरी

1. 'पृथ्वीराज रासो' को प्रामाणिक मानने वाले प्रमुख विद्वान हैं? - श्यामसुंदर दास, मिश्र बंधु, मोहनलाल विष्णुलाल पंडया, कर्नल टाड
2. 'पृथ्वीराज रासो' को अप्रामाणिक मानने वाले प्रमुख विद्वान हैं? - आचार्य शुक्ल, देवीप्रसाद, कविराज श्यामल दास, बूल्हर, गौरीशंकर, हीराचंद ओझा
3. 'पृथ्वीराज रासो' को अद्ध-प्रामाणिक (अर्थात् 'रासो' की रचना पृथ्वीराज के दरबारी कवि चंद ने किया था, किंतु उसका मूल रूप आज उपलब्ध नहीं है) मानने वाले प्रमुख विद्वान हैं? - हजारी प्रसाद द्विवेदी, मुनि जिनविजय, डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी
4. यह मत किसका है कि चंद ने पृथ्वीराज के दरबार में रहकर मुक्तक रूप में 'रासो' की रचना की थी? - नरोत्तमदास स्वामी
5. 'पृथ्वीराज रासो' को सर्वप्रथम अप्रामाणिक किसने घोषित किया? - डॉ० बूलर ने (सन् १८७५ में 'पृथ्वीराज विजय' ग्रंथ के आधार पर)
6. पृथ्वीराज रासो में किन दो रसों की प्रमुखता है? - शृंगार और वीर
7. पृथ्वीराज रासो की भाषा है? - ब्रजमिश्रित राजस्थानी या डिंगल।
8. पृथ्वीराज रासो को राजनीति की महाकाव्यात्मक त्रासदी किसने कहा है? - डॉ० बच्चन सिंह
9. 'पृथ्वीराज रासो' का काव्य-रूप है? - प्रबंधकाव्य (महाकाव्य)
10. 'पृथ्वीराज रासो' में लगभग कितने छंदों का प्रयोग हुआ है? - ६८
11. 'राजनीति पाइयै। ग्यान पाइयै सु जानिय।। उकति जुगति पाइयै। अरथ घटि बड़ि उनमानिय।।' - पंक्तियाँ किस ग्रंथ की हैं? - पृथ्वीराज रासो
12. "उक्ति धर्म विशालस्य। राजनीति नवरसं ।। खट भाषा पुराणं च। कुरानं कथितं मया।।" - पंक्तियाँ किसकी हैं? - चंदरवरदायी

किरण रानोलिया

शब्द-युग्म
(समान-सा उच्चारण किंतु भिन्न अर्थवाले शब्द)

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिए हुए होते हैं किंतु थोड़ी-सी भिन्नता से भी उनके अर्थ नितांत अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन की समानता-असमानता और अर्थ-भिन्नता के प्रति विशेष जागरूकता नहीं दिखाई जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। इसलिए भाषा की शुद्धता की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की विशेष जानकारी आवश्यक है। शब्द का अर्थ मूलतः उसके प्रयोग में निहित रहता है, अतः परीक्षा में भी शब्द के अर्थ को वाक्य में प्रयोग भगों करके स्पष्ट करना चाहिए।

शब्द	अर्थ
इंदु	चंद्रमा
इंदुर	चूहा
इति	समाप्ति
ईति	बाधा, दैवी प्रकोप
इंदिरा	लक्ष्मी
इंद्रा	इंद्राणी
उद्धत	अक्खड़
उदार	दानशील
उद्धार	तारना



SEC की प्रायोगिक परीक्षा लेते हुए डॉक्टर राजपाल व डॉ राजेंद्र प्रसाद

प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेजी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए।

Instigate = उकसाना

In subordination = अवज्ञा

Integration = एकीकरण

Intensive = गहन/प्रकृष्ट

Intent = आशय

Interalia = साथ-साथ

Interception = अंतरावरोध/बीच में पढ़ लेना/रोक लेना/सुन लेना

Interim = अंतरिम

Intermediate = मध्यवर्ती

Interpreter = दुभाषिया

Interrogate = पूछताछ करना

Invalid = अशक्त/अविधिमान्य

Inventory = सूची

Investigation = अनुसंधान (खोज)

Job = कार्य/नौकरी

Job work = छुटपुट, फुटकर काम

Join = कार्य भार ग्रहण करना मम्मलित होना

Joining report = कार्यग्रहण प्रतिवेदन

Joint = संयुक्त

Joint representation = संयुक्त शाक के अभ्यावेदन

Joint resolution = संयुक्त संकला

Journal = दैनिकी/पत्रिका

Judicial = न्यायिक

Junior = कनिष्ठ

Labour relations = श्रम सम्पर्क

Land mark = सीमा चिह्न

Land Tenure = पट्टेदारी/भूधृति

Lapse = बीतना/व्यपगमन

Lawful = विधि संगत

समाज की रीढ़: भारतीय संविधान एक आलोचनात्मक विश्लेषण

भारतीय संविधान, जिसे संविधान सभा द्वारा मध्य दो वर्ष, ग्यारह महीने और अठारह दिन के परिश्रम के बाद 26 नवंबर 1949 को अंगीकृत किया गया, केवल एक कानूनी दस्तावेज ही नहीं है। यह एक सामाजिक अनुबंध, एक राष्ट्रीय प्रतिज्ञा और भारत के लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष, समाजवादी गणराज्य की आत्मा है। यह वह सुदृढ़ रीढ़ है जिस पर भारत की विशाल, जटिल और विविधतापूर्ण सामाजिक संरचना टिकी हुई है। इसकी भूमिका को समझने के लिए केवल इसके निर्माण के इतिहास को नहीं, बल्कि स्वतंत्रता के बाद के सात दशकों में इसके क्रियान्वयन, प्रभाव और सामना की गई चुनौतियों को भी देखना होगा।

संविधान की सबसे बड़ी शक्ति उसकी समावेशी दृष्टि में निहित है। भारत जैसे देश में, जहाँ सैकड़ों भाषाएँ, बोलियाँ, जातियाँ, धर्म और सांस्कृतिक परंपराएँ विद्यमान हैं, एकता बनाए रखना सबसे बड़ी चुनौती थी। संविधान निर्माताओं ने इस चुनौती को एक अवसर में बदल दिया। उन्होंने "एकता में अनेकता" के सिद्धांत को संवैधानिक ढाँचे में ढाला। प्रस्तावना में ही "हम, भारत के लोग" शब्दों के साथ शुरुआत करके सार्वभौमिकता और सामूहिक इच्छा की नींव रखी गई। यह ढाँचा केंद्र और राज्यों के बीच शक्तियों के स्पष्ट बँटवारे (संघीय ढाँचा) के साथ-साथ एकल नागरिकता जैसे एकात्मक तत्वों का समन्वय करता है, जिससे राष्ट्रीय एकता और क्षेत्रीय विविधता दोनों का संरक्षण हो सके।

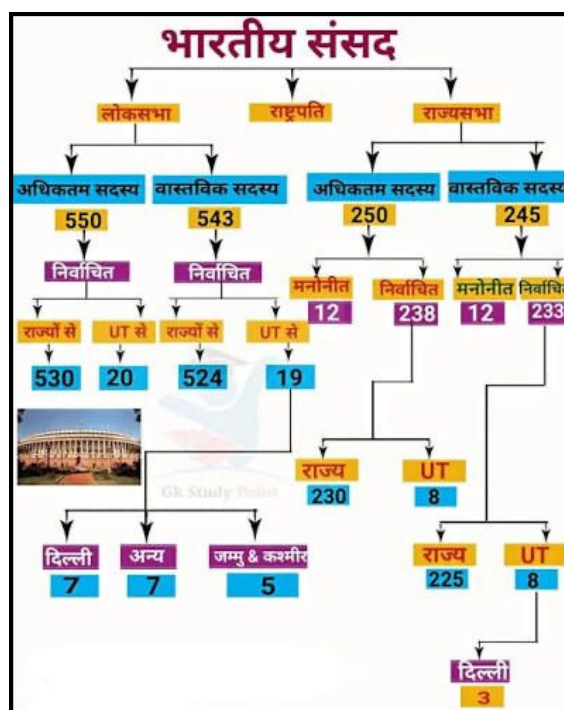
समाज की रीढ़ के रूप में संविधान का सबसे महत्वपूर्ण योगदान सामाजिक न्याय और परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करना है। एक ऐसे समाज में जो सदियों से जातिगत पदानुक्रम और सामाजिक बहिष्कार से जूझ रहा था, संविधान ने अस्पृश्यता का उन्मूलन (अनुच्छेद 17) किया और सभी नागरिकों को कानून की समान संरक्षण (अनुच्छेद 14) तथा सार्वजनिक स्थानों तक समान पहुँच का अधिकार दिया। इसने शोषित और वंचित वर्गों के उत्थान के लिए शिक्षा और रोज़गार में आरक्षण जैसे सकारात्मक कार्यवाही के उपायों का प्रावधान किया। इस प्रकार, संविधान केवल नकारात्मक स्वतंत्रताएँ (राज्य का हस्तक्षेप न करना) ही नहीं देता, बल्कि सामाजिक-आर्थिक समानता लाने के लिए राज्य को सकारात्मक दायित्व (नीति निदेशक तत्व) भी सौंपता है। यह दोहरा दृष्टिकोण ही उसे एक क्रांतिकारी और जीवंत दस्तावेज़ बनाता है।

लोकतंत्र की सफलता नागरिकों के अधिकारों और स्वतंत्रताओं की सुरक्षा पर निर्भर करती है। भारतीय संविधान इस आधारशिला को मज़बूती से स्थापित करता है। मौलिक अधिकारों का अध्याय (अनुच्छेद 12-35) व्यक्ति की गरिमा और स्वतंत्रता की गारंटी है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, समानता का अधिकार, शोषण के विरुद्ध अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार और संवैधानिक उपचारों का अधिकार नागरिकों को राज्य की मनमानी के विरुद्ध एक सशक्त शस्त्र प्रदान करते हैं। सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों को मौलिक अधिकारों का रक्षक बनाया गया है, जो न्यायिक पुनरीक्षण की शक्ति के माध्यम से कार्यपालिका और विधायिका पर अंकुश रखते हैं। इस प्रकार संविधान शक्तियों के पृथक्करण और न्यायपालिका की स्वतंत्रता को सुनिश्चित करके लोकतंत्र की संतुलन व्यवस्था को बनाए रखता है।

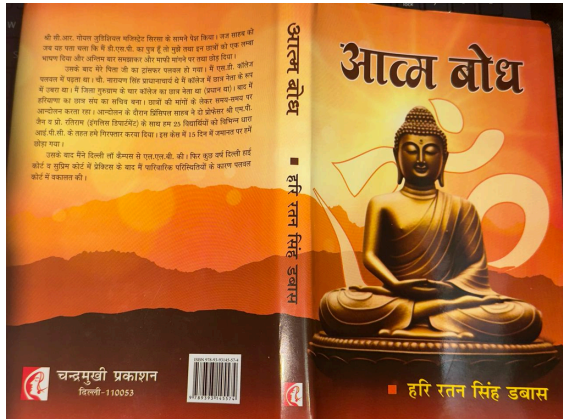
हालाँकि, कोई भी मानव-निर्मित ढाँचा दोषरहित नहीं होता। भारतीय संविधान की रीढ़ की ताकत का आकलन करते समय उसकी चुनौतियों और आलोचनाओं को भी स्वीकार करना चाहिए। सबसे पहले, संविधान का अतिविस्तृत और जटिल होना एक चुनौती है। इतने विस्तृत दस्तावेज़ का क्रियान्वयन और व्याख्या कठिन है। दूसरे, संविधान में वर्णित आदर्शों और ज़मीनी हकीकत के बीच एक बड़ा अंतराल है। समानता, स्वतंत्रता और न्याय के संवैधानिक सिद्धांत अक्सर सामाजिक-आर्थिक असमानता, जातिगत भेदभाव और सत्ता के दुरुपयोग के सामने कमज़ोर पड़ जाते हैं। तीसरे, राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी के कारण नीति निदेशक तत्वों, जो राज्य के लिए नैतिक मार्गदर्शक हैं, को पूर्ण रूप से लागू नहीं किया गया है। इससे सामाजिक-आर्थिक न्याय का लक्ष्य अधूरा रह गया है। चौथा, केंद्र और राज्यों के बीच शक्तियों के बँटवारे को लेकर निरंतर तनाव बना रहता है, जो कभी-कभी संघीय सहयोग के बजाय टकराव का रूप ले लेता है।

समय के साथ, संविधान ने स्वयं को साबित किया है कि वह एक जीवंत दस्तावेज़ है। इसकी लचीलापन संशोधन की प्रक्रिया (अनुच्छेद 368) और न्यायपालिका की गतिशील व्याख्याओं में निहित है। न्यायालयों ने संविधान के "मूल ढाँचे" के सिद्धांत जैसे अवधारणाओं को विकसित करके इसे नए सामाजिक-आर्थिक संदर्भों के अनुरूप ढाला है। आज डिजिटल गोपनीयता, पर्यावरण संरक्षण और लैंगिक न्याय जैसे नए मुद्दे संविधान की प्रासंगिकता को नई चुनौतियाँ दे रहे हैं, और संविधान न्यायिक व्याख्या के माध्यम से इनका उत्तर देने का प्रयास कर रहा है।

अंततः, भारतीय संविधान समाज की रीढ़ इसलिए नहीं है क्योंकि वह पत्थर की लकीर की तरह कठोर और अपरिवर्तनीय है, बल्कि इसलिए है क्योंकि वह जीवित और साँस लेता ढाँचा है जो समाज के साथ विकसित होता है। यह एक स्थिर आधार प्रदान करते हुए भी परिवर्तन की गुंजाइश रखता है। इसकी सच्ची ताकत कागज़ के शब्दों में नहीं, बल्कि भारत के नागरिकों की उसके प्रति निष्ठा, उसके मूल्यों में विश्वास और उन्हें अपने जीवन में उतारने की सामूहिक इच्छाशक्ति में निहित है। जब तक यह इच्छाशक्ति बनी रहती है, भारतीय संविधान समाज की वह रीढ़ बना रहेगा जो देश को सामाजिक उथल-पुथल, राजनीतिक उतार-चढ़ाव और आर्थिक चुनौतियों के बीच भी स्थिर, लोकतांत्रिक और न्यायपूर्ण बनाए रखती है। यह केवल एक दस्तावेज़ नहीं, बल्कि एक सतत चलने वाला लोकतांत्रिक प्रयोग और भारतीय गणराज्य का स्थायी प्रकाश स्तंभ है।



पुस्तक समीक्षा



लेखक: हरि रतन सिंह डबास

पुस्तक: "आत्म बोध"

मूल्य: ₹600.00

पृष्ठ: 176

चन्द्रमुखी प्रकाशन दिल्ली-110053

'आत्मबोध' समकालीन भौतिकवादी युग में मानवीय मूल्यों और आध्यात्मिक शांति की खोज का एक सार्थक एवं स्तरीय प्रयास है। यह पुस्तक आधुनिक समय की उस गहन विडंबना का सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत करती है, जहाँ मनुष्य भौतिक सफलता की अंधी दौड़ में नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक ज्ञान से विमुख होता जा रहा है। पुस्तक की केंद्रीय संवेदना "भौतिकता और नैतिकता के बीच सामंजस्य" स्थापित करने पर केंद्रित है, जो वर्तमान संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक और विचारणीय विषय है। लेखक ने इस पुस्तक को 'आध्यात्मिक शॉपिंग मॉल' की मौलिक संज्ञा प्रदान की है - एक ऐसा बौद्धिक बाजार जहाँ विभिन्न संतों, विचारकों और दार्शनिकों के श्रेष्ठ विचारों का सार एक ही छत के नीचे सुलभ है। श्री हरि रतन डबास द्वारा सावधानीपूर्वक संकलित शिक्षाप्रद दृष्टांतों ने पुस्तक को विशेष गरिमा और ऊँचाई प्रदान की है, जो जीवन के जटिल दार्शनिक सिद्धांतों को सरल कथाओं के माध्यम से सहज ही समझाने में सफल होते हैं।

www.gchisar.edu.in

पुस्तक की विषय-वस्तु अपनी व्यापकता और विविधता के कारण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसमें गीता का सार और गायत्री महामंत्र जैसे आध्यात्मिक आधारभूत विषयों से लेकर प्रभावशाली व्यक्तित्व विकास, जीवन मूल्यों का संवर्धन, सामाजिक चेतना का प्रसार और ऐतिहासिक प्रसंगों तक का सुविचारित समावेश किया गया है। संतोष, सेवा, सच्चाई और कर्तव्यनिष्ठा जैसे मूल्यों पर विस्तृत चर्चा पाठकों के चरित्र निर्माण में सहायक सिद्ध होती है।

पुस्तक की भाषा-शैली सरल, सहज एवं प्रवाहमयी होने के साथ-साथ गंभीर विषयों को सुबोध ढंग से प्रस्तुत करने में सक्षम है। उर्दू और संस्कृत शब्दों के सार्थक प्रयोग ने भाषा को विशेष समृद्धि प्रदान की है। भावनात्मक अपील और तार्किक विवेचन का सन्तुलन पुस्तक को विशेष प्रभावशीलता प्रदान करता है।

निस्संदेह, 'आत्मबोध' आज के भौतिकतावादी दौर में आंतरिक शांति और सामंजस्य की खोज करने वाले सभी पाठकों के लिए एक उत्कृष्ट मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर सकती है। यह पुस्तक न केवल व्यक्तिगत आत्म-मंथन और आत्म-साक्षात्कार के लिए प्रेरित करती है, बल्कि परिवार और समाज को नैतिक मूल्यों के आधार पर एक बेहतर दिशा देने का प्रेरणादायक संदेश भी देती है। समकालीन जीवनशैली में यह पुस्तक एक मार्गदर्शक प्रकाश-स्तंभ की भूमिका निभाने में पूर्णतः सक्षम प्रतीत होती है।

समीक्षक

डॉ राजपाल

हिंदी विभाग

गुरु गोरखनाथ जी

राजकीय महाविद्यालय हिसार